
Shri Sanakadi Chatushshloki

श्रीसनकाद्विचतुश्श्लोकी

Document Information

Text title : Shri Sanakadi Chatushshloki

File name : sanakAdichatushshlokI.itx

Category : deities_misc, gurudev, nimbArkAchArya, chatuHshlokI

Location : doc_deities_misc

Author : shrIjI

Proofread by : Mohan Chettoor

Latest update : January 28, 2023

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

January 28, 2023

sanskritdocuments.org

Shri Sanakadi Chatushshloki

श्रीसनकाद्वियतुश्श्लोकी



श्रीब्रह्मपुत्राँश्च मडर्षि भागा-

स्वर्षेश्वराऽर्या-श्रुतिशास्त्रशीलान् ।

गोपालमन्त्रार्थविधानदक्षा-

स्वान्ते भजे श्रीसनकाद्वियर्नान् ॥ १ ॥

वेदादि शास्त्रों द्वारा प्रतिपादित भगवदीय-सत्सङ्ग र्यर्ना में अेवं शालग्राम स्वरुप श्रीस्वर्षेश्वर प्रभु की नित्यार्चना में सर्वदा अभिरत, जगत् रचयिता श्रीब्रह्मा के मानस पुत्र मडर्षिवर्य सनक, सनन्दन, सनातन, सनत्कुमार जो श्रीगोपालमन्त्रराज का अर्थाभिव्यक्ति पूर्वक उसका सम्यक् विधान का सम्पादन करने में जो परम कुशल हैं, अैसे उन यतुः श्रीसनकादि मडर्षियों का डम अपने अन्तर्मन में भजन आराधन करते हैं ॥ १ ॥

सदा त्रिलोङ्ग्यां नितरामटन्तो-

राधामुकुन्दाऽङ्घ्रिकथाप्रवृत्तान् ।

यतुर्वयस्का-सुपुरातनाँश्च-

स्वान्ते भजे श्रीसनकाद्वियर्नान् ॥ २ ॥

जो अपनी अव्याडत गति से समस्त लोक-लोकान्तरों में वियरए परायए हैं । वृन्दावन-गोलोकविडारी युगलकिशोर भगवान् श्रीराधाकृष्ण के यरएकमलों की अमित मडिमा परक कथा-सत्सङ्ग सुधा का डी जो अनवरत पान करते हैं और जो सकल सृष्टि के आदि अति प्राथीनतम मडर्षि रुप यतुर्वर्षीय आयु से परम सुशोभित नवनवायमान दिव्य स्वरुप श्रीसनकादिकों का डम अपने डृढ्य स्थल में सतत अनुसन्धान पूर्वक भजन स्मरण करते हैं ॥ २ ॥

नित्यं ऋषेर्नारदपूज्यवर्य-

स्थाऽऽचार्यपादान्भुवने प्रसिद्धान् ।

श्रीमत्सुमारा-ब्रजकुञ्जरभ्या-

स्वान्ते भजे श्रीसनकाद्वियर्नान् ॥ ३ ॥

जो श्रीडरि चित् स्वरुप देवर्षिवर्य श्रीनारद के मन्त्रोपदेशक आचार्य रुप में समस्त ब्रह्माएड में परम प्रख्यात हैं । ँस भूतल पर ब्रज वृन्दावनधाम कीमञ्जुल-कुञ्जों में श्रीयुगलकिशोर भगवान् श्रीराधाविडारी की दिव्य उपासना

में सदा अभिरत रहते हैं, जैसे मडर्षिवर्य श्रीसनकाट्टि मडाभागों का अपने अन्तःकरण में समग्रविधा उनका ध्यान, भजन, चिन्तन करते हैं ॥ ३ ॥

परात्परब्रह्मविचारमग्रा-

न्भवाभ्युधि-क्लेशनिवारकात्रः ।

कारुण्यकोषानिड भूतले य

स्वान्ते भजे श्रीसनकाट्टिवर्यान् ॥ ४ ॥

जगन्निचन्ता सर्वान्तरात्मा परात्परतत्त्व रस परब्रह्म श्रीसर्वेश्वर के डी चिन्तन अनुस्मरण में डी सर्वदा तल्लीन रहने वाले और भूतल पर भीषण भवार्णव के नानाविध तापों के निवारण करने में प्रतिपल तत्पर करुणावरुणालय श्री सनकाट्टि मडर्षिवर्य का अपने चित्त में अनुसन्धान पूर्वक भजन करते हैं ॥ ४ ॥

सनकाट्टि-चतुशुशुकी भक्ताऽभीष्टप्रदायिनी ।

राधासर्वेश्वरा शरणान्तेन निर्मिता ॥ ५ ॥


रसिक भक्तों को अभिलषित मनोरथों को प्रदान करने वाली इस श्रीसनकाट्टि-चतुशुशुकी की उन्हीं मडर्षिवृन्दों की कृपाजन्य रचना डुई जो नित्य पठनीय है ॥ ५ ॥

एति श्रीसनकाट्टियतुशुशुकी समाप्ता ।

Proofread by Mohan Chettoor

——
Shri Sanakadi Chatushshloki

pdf was typeset on January 28, 2023

——
Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

